TOPIC- SOIL EROSION
भूमि/मृदा अपरदन/वितारा

मृदा की ऊपरी परत अर्थात शीर्ष मृदा का विभिन्न कारकों द्वारा अपरदित होना मृदा अपरदन कहलाता है। इसके लिए प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों ही कारक उत्तरदायी होते हैं। विभिन्न भौगोलिक दशाओं मे विभिन्न कारक सक्रिय होते हैं। जैसे शुष्क मरुस्थलों मे पवन, समुद्रतटीय भागों मे लहरे, पर्वतीय क्षेत्रों मे प्रवाहित जल तथा हिमानी आदि। प्राकृतिक कारकों द्वारा मृदा के कण बहाकर उड़ाकर तथा घोलकर अन्यत्र ले जाने से मृदा की प्राकृतिक संरचना परिवर्तित हो जाती है तथा गुणवत्ता मे ह्रास आ जाता है। प्रवाहित जल द्वारा मृदा का सर्वाधिक अपरदन होता है।

ज्वालामुखी उद्गार से निकलने वाली सल्फरयुक्त राख तथा उष्ण दलदली बहाव से प्रभावित क्षेत्रों मे मृदा के ऊपरी परत की उर्वरता समाप्त हो जाती है। भूस्खलन मृदा अपरदन का सर्वाधिक भयानक रूप है। पर्वतीय क्षेत्रों मे खड़े ढालों पर वनस्पति आवरण के अभाव मे भूखण्डों के खिसककर गिरने से कृषि भूमि तथा वन भूमि का विनाश होता है। धरातल से कम गहराई पर पाई जानेवाली ... रासायनिक युक्त चट्टानों से